सत्संग परम संत हुजूर
पुष्कर दयाल जी महाराज
(दिनांक 1 मई 2016, दुर्गापुर, धाम)

!!राधा–स्वामी!!

इस संसार में सतगुरू की महिमा कोई नही जानता है। जिसको गुरू की समझ आई, फिर वो और गुरू एक हो जाते हैं। गुरू संत होता है, जिसको संत की समझ आई, फिर वो खुद ही संत बन जाता है।

गुरू की महिमा कौन गाये, उसका गाना है कठिन।
पहुँचने वाले कहाँ हैं, तुझ तक वाणी और वचन।।

गुरू को समझना बहुत कठिन है, गुरू उस मालिक का रूप है, जब मालिक को कोई नही समझ पाया अभी तक, फिर गुरू को कहाँ समझ पाओगे? जिसको सतगुरू नही मिलता उसका क्या हाल होता है? वो जन्म मरण के चक्कर में लगा रहता है। इस जन्म मरण के चक्कर से गुरू ही निकालता है। हमारी बदकिस्मती यही है, हम गुरू को समझते ही नही हैं। हम गुरू को चमत्कारी बाबा समझते हैं। ये हमारी बेटियों की शादी करवाने के लिए आया है, ये हमारे बेटों को नोकरी दिलवाने के लिए आया है। ये हमारा कोर्ट में मुकदमा जितवाने के लिए आया है। ये हमारी अज्ञानता है। संसार के जितने भी मसले हैं, उनको आप खुद हल कर सकते हो। गुरू और आप में फर्क क्या है? सिर्फ एक ही फर्क है, गुरू सुलझा हुआ है और चेला उलझाा हुआ है। गुरू के पास ज्ञान है, चेले के पास ज्ञान नही है। अब जब गुरू अपना सारा ज्ञान चेले को दे देता है, फिर क्या हुआ? फिर फर्क मिट गया। चेला भी गुरू बन गया। जब चेला भी गुरू बन गया, फिर वो अपने सारे काम खुद ही कर सकता है। अपनी दुकानदारी भी खुद ही चला सकता है, अपने मुकदमें भी खुद ही जितवा सकता है। अपनी बेटियों की शादी भी खुद ही करवा सकता है। क्यों? क्योंकि उसमें भी वही शक्ति आ गई, जो शक्ति गुरू में है।

फिर वो खुद ही गुरू बन गया, यही ज्ञान है। और अज्ञान क्या है? अज्ञान यही है कि हम अपने आपको कमजोर और लाचार समझते हैं। गुरू जी हमको बचाओ, हम तो मर गए। ऐसे ही करते हैं हम। यही हमारा अज्ञान है। अगर हम सत्संग में सच्चे मन से सत्संग सुनते हैं, तो सारे काम हमारे अपने आप ही हो जाते हैं। अरे तुम शेर के बच्चे हो, तुम भी शेर बन जाओ। क्योंकि शेर का बच्चा शेर ही बनता है। तुम सारे काम खुद ही कर सकते हो। लेकिन गुरू को तो समझो पहले, गुरू क्या चीज है? गुरू तुमको शेर बनाना चाहता है। गुरू का काम यही है तुमको शेर बनाना। हम सब अपने आपको गीदड़ समझे बैठे हैं। गुरू हमको शेर बनाता है। तू पहचान अपने आपको तू शेर का बच्चा है, शेर बन। यही ज्ञान मेरे गुरू ने मुझको दिया। तो गुरू ज्ञान देता है, और उस ज्ञान से हमारी सोच बदल जाती है। जब हमारी सोच बदल गई, हम ही गुरू बन गए। सबसे पहला पाठ गुरू का क्या होता है? सबसे पहला

पाठ होता है, ये संसार मिथ्या है, ये संसार माया है, ये संसार एक सपना है। और हम गुरू जी का पहला पाठ ही भूल जाते हैं। समझने की कोशिश ही नही करते हैं।

हम क्यों आते हैं इस संसार में बार–बार, जब ये संसार मिथ्या है? क्योंकि हमको मजा आ रहा है इस संसार में। नारद जी गए थे सूअर के पास और उससे कहने लगे स्वर्ग में चलेगा? तो उसने कहा वहाँ गंदी नालियाँ हैं? नारद जी बोले वहाँ गंदी नालियाँ नही हैं। सूअर बोला मैं नही जाता। हमारा हाल भी यही है, हम भी संसार की गंदी नाली में पडा रहना चाहते हैं, और गंदगी खाते रहना चाहते हैं। गुरू कहता है चल मेरे साथ, मैं तुमको एक बहुत अच्छी जगह ले जाऊँगा, वहाँ हीरे–मोती के मकान हैं। लेकिन कोई वहाँ नही जाना चाहता। क्यों? क्योंकि हमको गुरू की समझ नही है। गुरू का पहला पाठ यही है कि संसार मिथ्या है, सपना है। लेकिन हम गुरू की बात पर विश्वास नही करते। क्योंकि हम सोचते हैं हमारी आँखें खुली हुई हैं, और हम सबकुछ देखते हैं, खाते–पीते हैं फिर हम क्यों माने ये संसार सपना है। ऐसा सोचते हैं हम, क्योंकि हमको गुरू की बात पर विश्वास नही है। अरे गुरू की बात को समझो ये संसार एक सपना है। और ये सपना कब टूट जाता है हमारा? जब हमारी तीसरी आँख खुल जाती है। फिर हम संसार से उदासीन हो जाते हैं। क्यों? क्योंकि हमको संसार की समझ आती है कि ये संसार क्या है?

एक दिन राजकुमार सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) अपने महल से बाहर निकले। तो देखा सडक पर एक बूड़ा आदमी लाठी लेकर चल रहा था। गौतम बुद्ध ने पूछा यह क्या है? कोचवान बोला हुजूर ये बूड़ा आदमी है, जब उम्र बढ़ जाती है तो आदमी बूडा हो जाता है। तो क्या एक दिन मैं भी बूढ़ा हो जाऊँगा? हाँ महाराज एक दिन आप भी बूढ़े हो जाओगे। फिर वह आगे चलता है और एक रोगी को देखता है और पूछता है, यह क्या है? कोचवान फिर कहता है, "हुजूर यह रोगी मनुष्य है, जब शरीर में कोई खराबी आ जाती है तो उसे रोग लग जाता है।" तो क्या मुझे भी रोग लग जाएगा? जी हुजूर एक दिन आपको भी रोग लग जाएगा। फिर आगे वो एक शव यात्रा देखता है। और वह फिर पूछता है कि यह क्या है? उसे फिर जवाब मिलता है, "हुजूर जब आदमी मर जाता है, तो उसे इसी तरह अंतिम क्रिया के लिए ले जाते हैं।" राजकुमार ने पूछा, "ये मरना क्या होता है?" कोचवान जवाब देता है, "जब आत्मा शरीर से निकल जाती है, तो उसे मरना कहते हैं।" क्या मेरे शरीर से भी आत्मा निकल जाएगी? जी हुजूर एक दिन आपके शरीर से भी आत्मा निकल जाएगी।

जब आदमी ये देखता है कि इस संसार में रोग ही रोग हैं, आदमी बूढा हो जाता है, आदमी के शरीर में रोग लग जाते हैं, आदमी की मृत्यु हो जाती है। तो फिर उसको संसार की समझ आती है। फिर उसकी तीसरी आँख खुलती है, और उसका ये सपना काँच की तरह टूट जाता है। हम रोज देखते हैं इस संसार में रोग ही रोग हैं, बेरोजगारी ही बेरोजगारी है, इस संसार में प्राणी एक–दूसरे को खा रहे हैं। बड़ी मछली छोटी मछली को खा रही है, आदमी–आदमी को खा रहा है, शेर हिरन को खा जाता है। क्या है ये संसार? क्या ये संसार रहने की जगह है? और फिर जब हमें संसार की समझ आ गई, फिर हम संसार से उदासीन हो जाते हैं। फिर हम कहते हैं, छोडो इस संसार को, और चलो वापिस अपने वतन धुरपद धाम, जहाँ शांति ही शांति है, आनन्द ही आनन्द है। यही हमारी समझ में बदलाव आना और

यही है गुरू का सबसे बडा चमत्कार। गुरू इसीलिए आता है संसार में। जब हमारे दिमाग में यह बात आ जाती है तब हम सोचते हैं छोडो इस संसार को और चलो अपने घर। जब तुम इस बात को अपनी रहनी बना लेते हो तब तुम संत बन गए। और यही चमत्कार करने गुरू आता है। गुरू तुम सबको अपने जैसा बनाने आता है। गुरू की हमेशा ये इच्छा रहती है कि सब मेरे जैसे बन जाएँ, और मैं सबको अपने साथ धुरपद धाम ले जाऊँ।

भवसागर से पार केवल गुरू ही कर सकता है। गुरू कैसे करता है भवसागर से पार? गुरू जब तुमको अपने जैसा बनाता है। फिर तुमको कहीं जाने की जरूरत नही है, तुम तो तर गए। जब गुरू ने तुमको अपने जैसा बनाया, तो तुम भवसागर पार कर गए। भवसागर कहाँ है? भवसागर इसी संसार में है। इस संसार में बडे–बडे मगरमच्छ हैं और हमको खाने के लिए तरसते हैं। जब गुरू हमारा हाथ पकडता है तो एक भी मगरमच्छ सामने नही आता। मगरमच्छ क्या हैं इस संसार के? मगरमच्छ हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, राग–द्वेष, अहंकार, नफरत, यही हैं सारे मगरमच्छ, और हमको खाने के लिए तैयार हैं। लेकिन जब सतगुरू आपको भवसागर से पार कराता है तो ये सारे मगरमच्छ भाग जाते हैं। ये भवसागर हमारी दोनो आँखों के ऊपर मध्य में हैं और सारे मगरमच्छ भी यहीं हैं। और धुरपद धाम भी यही है। सब यहीं हैं। फिर हमें क्या करना है? हमें अपनी सोच बदलनी है। एक बार सोच बदल गई, सब दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है। सोच कौन बदलता है? एक सतगुरू ही हमारी सोच को सही दिशा में बदलता है बाकी दुनियां के सारे लोग हमें भ्रमित करते हैं, उल्टा पाठ पढ़ाते हैं संसार में फंसाये रखने का।

जब आपकी सोच बदल गई फिर आपकी कायापलट हो जाती है। आप संसार से निडर हो जाते हैं। फिर आपके अंदर सिर से लेकर पांव तक बदलाब आ जाता है। मैं अपनी बात कर रहा हूँ। गुरू ने जब मुझको ज्ञान दिया, तो मेरे अंदर विस्फोट हो गया। मेरे बोलने का ढंग बदल गया, मेरे सोचने का ढंग बदल गया, मेरे देखने का ढंग बदल गया। जिसको मैं अपना दुश्मन समझता था, उसको मैं अपना दोस्त समझने लगा। जिसको मैं नफरत करता था, उसको मैं प्रेम करने लगा। ऐसा बदलाब आ जाता है जिंदगी में। ये मैं कोई किताबी ज्ञान नही बता रहा हूँ, ये मैं अपना अनुभव बता रहा हूँ। जब हमारी सोच बदल जाती है, फिर हम सोचते हैं, अरे! इसके अंदर भी तो वही मालिक है, फिर मैं क्यों नफरत करूँ इससे। अगर मैं इसको थप्पड़ मारता हूँ तो अपने आपको थप्पड़ मारता हूँ। क्योंकि वो भी राधास्वामी है और मैं भी राधास्वामी हूँ। तो ये बदलाब हमारे अंदर कैसे हो जाता है? ये बदलाब हो जाता है गुरू की संगत से, गुरू के सत्संग से।

कबीर साहब कहते हैं–
रहना नही देश वीराना है।
ये संसार कागज की पुडिया, बूँद पडे गला जाना है।
ये संसार काठ की बाड़ी, आग लगे बरि जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधु, सतगुरू नाम ठिकाना है।।

कबीर साहब भी यही कह रहे हैं, ये संसार कागज की पुडिया है। अगर गलती से एक बूँद गिर गई, सब खत्म हो जाता है। इसलिए कबीर साहब कहते हैं,सारा पैसा एक सतगुरू पर लगाओ। क्योंकि वो ही एक जीतने वाला घोडा है। संसार के किसी घोडे पर पैसा मत लगाओ। ऐसा नही है कि हम संसारा को छोडकर जंगलो, पहाडों पर चले जाएँ।

हमें संसार में रहना है, धन भी कमाना है। धन कमाओ ईमानदारी से कमाओ, घर में सब सुविधाएँ रखो, मकान बनाओ, घर में टी. वी. रखो, फ्रीज रखो, मोटर कार रखो। लेकिन मन में ये रखो मेरा कुछ भी नही है। अगर हम इन सब चीजों को अपने साथ लेकर आते, फिर तो हम कहते हाँ ये सब चीजें हमारी हैं। लेकिन हम अपने साथ तो इन्हें लेकर आये नही फिर हम कैसे कह सकते हें कि ये चीजें हमारी हैं। ये शरीर भी हम साथ लेकर नही आए, ये शरीर भी नाशवान है। हमेशा अपने मन में यह विचार रखो कि इस संसार की कोई भी चीज मेरी नही है। क्यों? क्योंकि जब हम किसी चीज को अपनी मानते हैं, और जब वो हमसे छूट जाती है, तो हमको बहुत दुख होता है। हम रोने लगते हैं। अगर हम मन में ये बात रखें कि ये चीज मेरी है ही नही, और जब वो चीज हमसे छूट जाएगी, तो हमें कोई दुख होगा ही नही। तब हम बहुत सुखी रहेंगे। क्यों? क्योंकि तब हम समझेंगें कि मेरी चीज गई ही नही। जब दूसरे आदमी का पर्स गिर जाता है, तो क्या हमें कोई दुख होता है? नही होता। इसलिए हमारे मन में यही भाव रहना चाहिए कि जो पर्स है और इसमें जो पैसे हैं, वो मेरे नही हैं। अगर वो पर्स गिर भी गया तो हम कहते हैं वो पर्स मेरा था ही नही। जिसका था वो ले गया। ये भावना कहाँ से आती है हमारे मन में? ये भावना हमारे मन में आ जाती है, जब हम गुरू का सत्संग सुनते हैं। इसीलिए–

सत्संग लागी रहो रे भाई, तेरी बिगड़ी बात बन जायी।

राधास्वामी।